B- IV
L- 37
MIH

1935 से 1939 के मध्य कांग्रेस

- 1935 के Act के अन्तर्गत चुनाव में भाग ले या न ले इसको लेकर कांग्रेस में दो दृष्टिकोण उभरा।

एक तरफ राजगोपालाचारी, सत्यमूर्ति, एम.ए. अंसारी इत्यादि नेता थे जो चुनाव में भाग लेने के समर्थक थे, वहीं दूसरी तरफ सुभाष चन्द्र बोस एवं अन्य समाजवादी नेता चुनाव में भाग लेने का विरोध कर रहे थे।

- 1936 में कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (अध्यक्ष पंडित जवाहर लाल नेहरू- 50वाँ अधिवेशन) इसमें चुनाव में भाग लेने पर सहमति बनी।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

* 1936 में फैजपुर अधिवेशन- पंडित जवाहर लाल नेहरू (अध्यक्ष)

- ग्रामीण भारत में कांग्रेस का पहला अधिवेशन
- इस अधिवेशन में किसानों से संबंधित मुद्दों पर विभिन्न प्रस्ताव पारित किये गए।

1937 में प्रान्तीय चुनाव

11 प्रांत - संयुक्त प्रान्त, बिहार, उड़ीसा, मद्रास मध्य प्रांत, बाम्बे (6 हिन्दू)

— सिंध, पंजाब एवं उ० प० सीमा प्रान्त (4 मुस्लिम)

असम , बंगाल

- दो प्रांतो में गैर कांग्रेसी सरकार
  (i) बंगाल - कृषक प्रजा पार्टी - फजलुल हक
  (ii) पंजाब - युनियनिस्ट पार्टी - सिकंदर हयात खाँ
- सिंध एवं असम के सरकार में कांग्रेस भी शामिल थी एवं अन्य सात प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार।
- चुनाव में मुस्लिम लीग एवं हिन्दू महासभा की स्थिति अच्छी नहीं थी।
- डॉ अम्बेडकर की इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी ने बाम्बे में अच्छा प्रदर्शन किया था।(1936)

कांग्रेस की सरकारों के कार्य

- राजनीतिक बंदियों को रिहा, प्रेस की स्वतंत्रता।
- आपातकालीन आदेशों को समाप्त किया गया।
- साम्प्रदायिक दंगो पर कठोरता पूर्वक नियंत्रण स्थापित किया गया।
- मंत्रियों के वेतन में कटौती की गई।
- किसानों को राहत देने के लिए भी कदम उठाये गए।
  Ex - भू-राजस्व में कटौती।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- प्रान्तीय सरकारो द्वारा मजदूरों की दशा में सुधार करने के लिए कदम उठाए गए।
- बेसिक शिक्षा को भी प्रान्तीय सरकारों के द्वारा लागू करने की कोशिश की गई।
- स्वच्छता अभियान, छुआछूत का विरोध, शराब के सेवन पर निषेध, खादी को प्रोत्साहन इत्यादि के दिशा में भी सरकारी स्तर पर प्रयास किये गये।
- द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजो ने भारत को भी शामिल करने की घोषणा की। इस मुद्दे को लेकर कांग्रेसी सरकारो ने त्यागपत्र दिया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

कांग्रेसी सरकार एवं चुनाव परिणाम का महत्व

- चुनाव में कांग्रेस को व्यापक सफलता मिली और यह इस तथ्य को स्थापित करने के लिए पर्याप्त था कि कांग्रेस को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त है।
- मुसलमानों एवं दलितों के लिए आरक्षित सीटों पर भी कांग्रेस को पर्याप्त सफलता मिली, अर्थात यह तथ्य भी स्थापित हुआ, कि कांग्रेस समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है।

- ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय मंत्रियों के अधीन कार्य करना पड़ रहा था। इससे अधिकारियों का मनोबल कम हुआ।
- सरकार संचालन एवं लोकतांत्रिक प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से भी इसका महत्व है क्योंकि आगे चलकर सरकार के संचालन में यह अनुभव उपयोगी साबित हुआ।

Note :-

(i) चुनाव के पश्चात साम्प्रदायिक संगठनों ने जनाधार के विस्तार के लिए आक्रामक नीति अपनाई और मुस्लिम लीग को ब्रिटिश सरकार ने खुला समर्थन दिया।

(ii) कांग्रेसी सरकारों के त्यागपत्र को मुस्लिम लीग ने मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।

(iii) 1938 में कांग्रेस का हरिपुर अधिवेशन गुजरात में।
इसके अध्यक्ष थे - सुभाषचन्द्र बोस

(iv) नेहरू जी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय योजना समिति बनाई गई।
भारत की आजादी में रियासतों की आजादी भी शामिल होगी यह प्रस्ताव पारित हुआ।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

1939- त्रिपुरी अधिवेशन (जबलपुर) :- अध्यक्ष "सुभाषचन्द्र बोस"

- सुभाषचन्द्र बोस ने गाँधी जी के उम्मीदवार "पट्टाभि सीतारमैया" को अध्यक्ष पद के चुनाव में पराजित किया।
- सुभाषचन्द्र बोस को त्यागपत्र देना पड़ा और उनके स्थान पर राजेन्द्र प्रसाद को अध्यक्ष बनाया गया।
- सुभाषचन्द्र बोस ने 1939 में forward block नामक पार्टी बनाई।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपंथ

समाजवाद, मार्क्सवाद / साम्यवाद, वामपंथ — Left

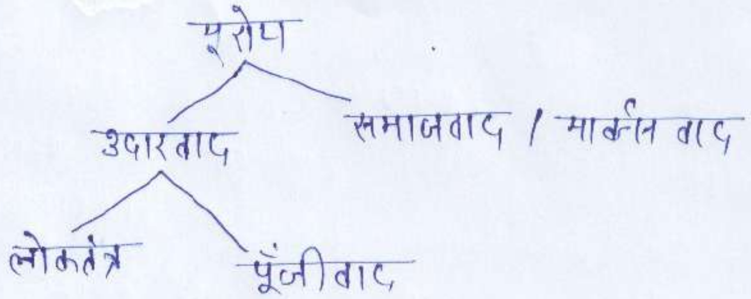

समाजवाद :-

एक ऐसी विचारधारा जो लोकतांत्रिक तरीके से सामाजिक, आर्थिक, न्याय की प्राप्त करने पर बल देती है और इसके केन्द्र में होते है, गरीब एवं श्रमिक वर्ग के लोग।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

मार्क्सवाद :- श्रमिको एवं गरीबो को मुख्यत: सामाजिक, आर्थिक न्याय दिलाने पर बल देने वाली विचार धारा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिंसात्मक मार्ग अपनाने पर बल देता है।

- मार्क्सवादी विचारधारा का लक्ष्य है वर्गविहीन एवं राज्य विहीन राज्य की स्थापना, इसी को साम्यवाद भी कहा जाता है।
- समाजवादी एवं मार्क्सवादी विचारधारा के अनुयायियों को वामपंथी कहते हैं।

वामपंथ के उदय के कारण

- 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में आधुनिक उद्योगो का विकास, औद्योगिक श्रमिकों की संख्या में वृद्धि, श्रमिको की दयनीय दशा जैसे - कम वेतन, रोजगार को लेकर असुरक्षा, महिलाओं एवं बच्चो का विशेष तौर पर शोषण।

- परिवहन के आधुनिक साधनो का विकास एवं श्रमिको का शोषण।

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान महँगाई में वृद्धि एवं युद्ध के पश्चात बेरोजगारो की संख्या में वृद्धि।

- नरमदलीय नेतृत्व (कांग्रेस) एवं क्रांतिकारी नेताओं को भी समाजवाद की समझ थी लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन पर इस विचारधारा का कुछ खास प्रभाव नही था।

- 1917 में रूस में मार्क्सवादी क्रान्ति की सफलता एवं 1922 मे असहयोग आन्दोलन को वापस लिए जाने के कारण शिक्षित युवाओं में निराशा जैसी परिस्थितियों के कारण 1920 के दशक में कांग्रेस के भीतर एवं बाहर इस विचारधारा का तेजी से प्रसार हुआ।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

कांग्रेस में वामपंथ

उपरोक्त कारण :-

- नेहरू, बोस में समाजवादी विचारधारा का प्रभाव एवं 1920 के दशक में कांग्रेस में इनका बढ़ता महत्व।
- 1925 में स्थापित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य कांग्रेस पार्टी के भी सदस्य थे।
- कांग्रेस के भीतर 1934 में स्थापित कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने भी कांग्रेस के समाजवादीकरण मे भूमिका निभाई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Note:-

- 1933 में नासिक जेल मे कांग्रेस के भीतर 'समाजवादी पार्टी' के गठन की योजना बनाई गई। इनमें प्रमुख थे- जयप्रकाश नरायण, ए. पटवर्धन, मीनू मसानी, नरेन्द्र देव, राम मनोहर लोहिया इत्यादि।
- 1934 में पटना मे इसकी स्थापना की गई। (सचिव - जयप्रकाश नरायण)
- 1934 में ही बाम्बे मे सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में इसकी पहली बैठक हुई।

इसका उद्देश्य था - स्वतंत्रता, सामाजिक आर्थिक न्याय, "कांग्रेस समाजवादी पार्टी" कांग्रेस का समाजवादीकरण करना चाहती थी तथा किसानों, मजदूरों, छात्रों एवं महिलाओं के बीच जनाधार का विस्तार भी।

कांग्रेस पर प्रभाव / स्वतंत्रता पर प्रभाव

लक्ष्य – पूर्ण स्वराज्य

कार्यक्रम – 1931 - करांची कांग्रेस
1936 - फैजपुर कांग्रेस
- राष्ट्रीय योजना समिति
प्रांतीय सरकारों के कार्य

कांग्रेस की संगठन पर प्रभाव

3 बार नेहरू और दो बार बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बनते हैं।

कांग्रेस की रणनीति पर प्रभाव -

- निरंतर आन्दोलन के चलाने के पक्ष में।
- संवैधानिक राजनीति का विरोध।
- सरकार से किसी भी प्रकार के समझौते एवं बातचीत के विरूद्ध।
- समाजवादी गांधी जी के नेतृत्व को तो स्वीकार

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

करते थे, लेकिन आन्दोलन को अधिक से अधिक उग्र बनाने पर बल देते थे।

अन्य :-

1940 के दशक मे राष्ट्रीय आन्दोलन पर इनका अत्याधिक प्रभाव रहा जैसे- भारत छोड़ो आन्दोलन।

- स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माण तथा भारत के विदेश एवं आर्थिक नीति को भी इस विचारधारा ने व्यापक तौर पर प्रभावित किया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR